शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

नरेंद्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में उत्तरआधुनिकता

बीज शब्द :

नरेद्र कोहली, हिन्दी उपन्यास, रामकथा, पुराण, उत्तर आधुनिकता, उत्तर संरचनावाद

रामकथा पर आधारित उपन्यासों की कथा यद्यपि सभी के लिए सर्वविदित है परन्तु नरेन्द्र कोहली ने प्रचलित रामकथा से बिल्कुल अलग हटकर एवं तर्कयुक्त तथा वैज्ञानिक रामकथा को प्रकट किया। वे कहते है वैसै भी मेरा लक्ष्य अवतार के कारणों का वर्णन न होकर अन्याय का विरोध करना था। ल्योतार टोटेलिटी के विरुद्ध है। उत्तर आधुनिकता की परिभाषा देते हुए वह कहते है हमें सकलता के खिलाफ युद्ध छेड देना चाहिए, इसकी अपेक्षा हमारी सक्रियता विशिष्टता के प्रति होनी चाहिए। इस शोध पत्र में रामकथा के ऐसे ही पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

*****

डॉ० राजनारायण शुक्ल
हिन्दी विभाग
शंभुदयाल पी0जी0 कालेज, गाजियाबाद

नरेंद्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता

बीसवी शताब्दी के सातवें दशक में जब हिंदी के साहित्य जगत में आधुनिकता बोध के सभी बिंदुओं का चित्रण हो रहा था। वही दूसरी ओर उस पर अस्तित्ववाद का प्रभाव भी पड़ रहा था। परिणामत: साहित्य में पारिवारिक विघटन के साथ-साथ भय, त्रस, पीड़ा, मृत्युबोध, निराशा, कुंठा जैसी संवेदनाएं चित्रित की जा रही थी। भारतीय समाज की स्थिति भी यही थी। नगरों और महानगरों में सामूहिक परिवार टूट रहे थे। सामाजिक घुटन की स्थिति यहां तक पहुंच गयी थी कि एकाकी परिवार भी टूटने लगा था। लहदू एकाकी परिवार में तलाक के मुकदमों की संख्या बढ़ने लगी थी।

भारतीय समाज और साहित्य की जो स्थिति थी कमोवेश वैसी ही स्थिति पूरे विश्व की सभी भाषाओं के साहित्य और समाज की भी थी। आठवें दशक में चरम भौतिकता और उसके परिणामों का बहिष्कार करती थी जिसके परिणामस्वरुप समाज की अपनी संस्कृति की पहचान खोने लगी थी। इस तथ्य को जानने हेतु क्यूबेक सरकार द्वारा समाज की वर्तमान स्थिति जानने के लिए ल्योतार को यह कार्यभार सौंपा गया। ल्योतार ने सर्वप्रथम यह बताया कि विज्ञान, साहित्य और कला के क्षेत्र में परंपराओं का पालन न किए जाने के कारण संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ल्योतार ने कहा कि नई प्रौद्योगिकी के कारण महाआख्यान तत्व, समीक्षा, दर्शन आदि विलुप्त हो गई है। उसने बताया कि समाज एकरूपता को नही अपनाना चाहता यही कारण है कि लोग अब अपनी पुरानी परंपराओं और ज्ञान की ओर आकृष्ट हो रहे हैं । इसी को उसमें उत्तर आधुनिकता का नाम दिया।

यह सर्वमान्य, सर्वभौमिक और सार्वकालिक सत्य है कि एक ही प्रकार के विचार एक ही समय में विभिन्न राष्ट्रों के बौद्धिक प्राणियों के मन में उत्पन्न होते हैं। 1979 में ल्योतार ने समाज की जिस स्थिति को देखा था, वह एक दिन में उत्पन्न नही हुई थी अपितु लगभग एक दशक से उसका आरंभ हो चुका होगा। आठवां दशक भारत में प्रतिक्रियाओं का दशक था। लहदी काव्य में राजनीतिक कविताएं लिखने की परंपरा चल पड़ी थी, उसी प्रकार भारत के नैतिक व्यद्रियों की प्रतिक्रियाएं भिन्न-भिन्न रही। ल्योतार ने कहा था कि मानवता के विकास के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

इधर हिंदी के महान उपन्यासकार नरेंद्र कोहली भी आठवें दशक में पहुंचकर उपभोक्तावादी संस्कृति के कुप्ररिणामों से विचलित हुए और उन्होंने मानवतावादी कथा राम- कथा पर उपन्यास लिखने का निश्चय किया। रामकथा को औपन्यासिक शैली में प्रस्तुत करने के पीछे निश्चय ही आधुनिकता की अपसंस्कृति के विरुद्व मानसिक प्रक्रिया थी। वे स्वयं दीक्षा उपन्यास की भूमिका में इस तथ्य को मानवतावादी दृष्टि के द्वारा अभिव्यद्रि देते हैं, और मैंने अपने शैशव से राम को एक अत्यंत सहज मानवीय चरित्र के रूप में देखा था मेरे मन के राम ने मुझे सदा एक जनवादी समता तथा न्याय पर आधृत चेतना दी थी। सामंती और पूंजीवादी चुनाव के सर्वथा विरुद्ध राम मुझे सदा जनवादी नैतिकता के ध्वज वाहक दिखे थे।

नरेंद्र कोहली के मानस में जब राम के उच्च मानवीय मूल्यों पर आधारित उपन्यास जन्म ले रहा था तब तक न तो उत्तर आधुनिकता का जन्म हुआ था और न ही तथा कथित वामपंथी इसे उचित मानते थे कि राम और कृष्ण पर कोई वामपंथी उपन्यासकार उपन्यासों की रचना करें। स्वयं नरेंद्र कोहली ने वापपंथियों के इस विरोध पर प्रकाश डाला था।

'एक विशेष राजनीतिक संप्रदाय के लोग दीक्षा के प्रकाशन के समय से ही मुझे समझा रहे हैं की राम कथा लिखने के कारण मेरे लेखन ने एक गलत मोड़ ले लिया है जो मेरे साहित्यिक जीवन का अवसान है। वे मुझे यह भी समझाते हैं कि वे मेरी इस रचना से प्रसन्न नही है और अब वे क्षमता भर मेरा, मेरी कृतियों का, मेरे लेखन का और मेरे अस्तित्व का विरोध ही करेंगे।

हिंदी साहित्य का पाठक वर्ग हमारे कथन की पुष्टि करेगा कि नरेंद्र कोहली ही हिंदी के प्रथम उत्तर आधुनिक साहित्यकार हैं। लहदी के पाठक वर्ग मैं नरेंद्र कोहली के इन परंपरावादी उपन्यासों का जो स्वागत किया है, वह सर्वविदित है। उनके विरोधी स्थिति यहां तक पहुंच गम्र कि उत्तर आधुनिकता का झंडा उस राजनीतिक विचारों के समर्थकों को उठाना पड़ा है, जिन्होंने नरेंद्र कोहली को चेतावनी दी थी। 1975 में राम कथा पर आधारित उनका पहला उपन्यास दीक्षा प्रकाशित हुआ।

अब हम नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में चित्रित राम के उत्तर आधुनिकतावाद स्वरूप पर विचार करेंगे।

राम कथा पर आधारित उपन्यासों की कथा यद्यपि सभी के लिए सर्वविदित है परंतु नरेंद्र कोहली ने प्रचलित रामकथा से बिल्कुल अलग हटकर एवं तर्कयुद्र तथा वैज्ञानिक रामकथा को प्रकट किया। वे कहते हैं वैसे भी मेरा लक्ष्य अवतार के कारण ों का वर्णन ना होकर अन्याय का विरोध करना था। ल्योतार टोटेलिटी के विरुद्ध है। उत्तर आधुनिकता की परिभाषा देते हुए

वह कहते हैं हमें सकलता (टोटेलिटी) के खिलाफ युद्ध छेड़ देना चाहिए, इसकी अपेक्षा हमारी सक्रियता विशिष्टता के प्रति होनी चाहिए।

नरेंद्र कोहली के उपन्यास दीक्षा में रावण का चरित्र सकलता को स्थापित करता है। वह भौतिकवादी संस्कृति का प्रतीक है। दीक्षा में नरेंद्र कोहली रावण के शासन को सुस्पष्ट करते हुए लिखते हैं- 'पर रावण के सैनिक अभियानों के पीछे सुशासन का लक्ष्य नही है। वह तो अपने लिए विलास, संपन्नता, अधिकार चाहता है उसके लिए न्याय अन्याय का द्वंद्व नही है। उसका शासन एक व्यद्रि सर्वशद्रिमान अधिनायक का शासन है वह न अपनी मंत्री परिषद का परामर्श मानते हैं न विद्वानों का। निर्धन प्रजा की सुनवाम्र नहह्ल है उसके राज्य में उसके तंत्र के मूल में स्वर्ण है पुत्र।

रावण के इसी अधिनायकवादी शासन संपूर्ण ब्राह्मण को एवं राज्य करने की इसकी मनोकामना के विरुद्ध नरेंद्र कोहली के जननायक राम खड़े होते हैं। यहां में पुनः स्मरण चाहूंगा कि ल्योतार विखंडन अर्थात स्थानीयता के पक्षधर है, वे विविधता के हामी है। दीक्षा के नायक राम इस कसौटी पर बिल्कुल खरे उतरते हैं। अयोध्या के राजकुमार होते हुए भी रावण के विशाल साम्राज्य के विरुद्ध खड़े होने के लिए उन्होंने अयोध्या से सेना नही बुलाई। अपितु उन्होंने अपने वनवास क्षेत्र की जनजातियों शबर, किलात, वानर आदि को एकत्र किया। रावण के अत्याचारों से निर्भीकतापूर्वक लड़ना सिखाया जोश भरा। स्थानीय ग्रामीणों के प्रति राम के विश्वास को व्यद्र करते हुए नरेंद्र कोहली दीक्षा में लिखते हैं कि इससे भी बड़ा आश्चर्य था कि साथ लगते ग्रामों के प्रायः समस्त सभी पुरुष अपने परिवारों के साथ सिद्धाश्रम में उपस्थित थे। राम के नेतृत्व में राक्षसों के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार लोग कौन थे। नरेंद्र कोहली दीक्षा में लिखते हैं 'रंग रूप से वे लोग निषाद जाति के लगते थे। इनके पास कुछ रोटी, पुरानी तलवारे, कुछ कुल्हाड़ियाँ और छोटे-छोटे धनुष थे। इनके बाण बिना ञल के थे। परंतु इनका पराक्रम अद्‌भुत था।'

उत्तर आधुनिकता स्थानीयता के साथ -साथ उपेक्षित या नकार दिए गए, व्यद्रियों या समूहो की भी पक्षधर है रिचर्ड गोट कहते हैं। उत्तर आधुनिकता मनुष्य की मुद्रि के रूप में जिसमें विखंडन, संस्कृतियों की बहुलता या समूहो की विविधता है। यह इसके विभाग में ही है कि अगणित समूह पिछड़े और कमजोर वर्ग, स्त्रियों और नाना प्रकार के संप्रदाय आगे पाएंगे।

उत्तर आधुनिकता की यह स्थिति राम के द्वारा अहिल्या जैसी उपेक्षित नारी को सामाजिक सम्मान दिलाने मैं स्पष्ट होती है। 'मेरी प्रतीक्षा आज पूर्ण हुई। मेरी साधना सफल हुई। मेरा आत्मब्विवास लौट आया है। राम तुमने मेरे मन को विश्वास दिया है कि मैं अपराधिनी नही हूँ।'

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं नरेंद्र कोहली के राम कथा कथात्मक उपन्यासों में आधुनिकता की अनेक दशाएं स्पष्ट रूप से चित्रित हुई है।

संदर्भ सूची

1. दीक्षाए नरेंद्र कोहलीए पृष्ठ 191
2. वही
3. आधुनिकताए उत्तर आधुनिकता व नव समाजशास्त्रीय सिद्धांतए दोषीए पृष्ठ 183
4. अवसरए नरेंद्र कोहलीए पृष्ठ 85

◆◆◆